RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.025

निराला का व्यक्तित्व और कृतित्व

डॉ. माधवी

सहायक प्राचार्य, हिंदी विभाग, गंगा सिंह कॉलेज (छपरा)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 September 2020

Keywords
सामंजस्य, यथार्थ, प्रवृत्ति-निवृत्ति

ABSTRACT

सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" का व्यक्तित्व विरोधों का सामंजस्य है| आदर्श और यथार्थ, राग-विराग, दुख:-आनंद व प्रवृत्ति-निवृत्ति इत्यादि जीवन की विविधता निराला जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में देखी जा सकती है, इसलिए यह किसी एक निश्चित "वाद" के कवि ना होकर, अनुभव-यथार्थ के कवि हैं| इनकी कविता 1916 से लेकर 1961 तक विभिन्न आयामों में दिखाई देती है| छायावाद के दौर में प्रगतिवाद रचनाएं तो प्रगतिवाद के समय मार्क्सवादी कविता इत्यादि देखने को मिलती है|

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी का अनुभव क्षेत्र व्यापक है,यह व्यापकता विषय-संदर्भों में दिखाई पड़ती है, जिस कारण निराला किसी वाद के अनुगामी नहीं है वरन वाद, छंद व भाषा इत्यादि के बंधन को तोड़ कर मौलिक कविता का भावनाओं के आधार पर अभिव्यक्ति करते हैं यह समय की आवश्यकता अनुसार प्रसंग व विषय का चयन करते हैं|

'राम की शक्ति पूजा' निराला जी के मानसिक यात्रा की सिद्धि है, जो इनकी सर्वश्रेस्ठ रचना में में से है | उन्होंने इस कविता में पौराणिक ढांचा और आधुनिक परिवेश को लिया है| निराला के राम आधुनिक मानव है और 1936 के राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित है| इसमें राम के रूप में प्रतीकात्मक रूप में गांधी जी हैं, व्यक्तिगत रूप में स्वयं निराला जी हैं तथा शाशवत रूप से हर साधक है| निराला के राम के आंखों में विवशता और असमर्थता के आंसू हैं| आधुनिक कारणों से उनके राम कई बार रोते हैं, जैसे :-

'अन्याय जिधर है, उधर शक्ति कहते छल -छल हो गए नयन'

निराला का अनुभव उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय गीत के रूप में, व्यंग के रूप में,दार्शनिक नारी -चित्रण इत्यादि रूप में दिखाई देती है| उनकी रचनाओं में एक तरफ अपार दुख है तो दूसरी तरफ सुख को चेहरा भी है, निराला जी एक तरफ कहते हैं:-

'दुख ही जीवन की कथा रही'

और दूसरी तरफ कहते हैं:-

'सखि वसंत आया, भरा हर्ष वन के उनके मन नववर्ष छाया'

निराला जी का सृजन व विध्वंस दोनों का चित्र प्रस्तुत करते हैं| राम की शक्ति पूजा में एक तरफ हार स्वीकार करते हैं:-' मित्रवर विजय होगी ना समर तो दूसरी तरफ आत्मविश्वास भी चरण सीमा में दृष्टिगोचर होता है;- 'वह एक और मन रहा राम का जो ना थका '

छायावाद के रचनाकारों में एकमात्र निराला जी ही ऐसे हैं, जिनका दु:ख बहुआयामी व वास्तविक है, जैसे:-

धन्ये मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित ना कर सका
कन्ये गत कर्मों का अर्पण
कर करता मैं तेरा तर्पण

-सरोज स्मृति

प्रसाद और महादेवी वर्मा का दु:ख आंतरिक है यानि एक पक्षीय है, अनुभव का धरातल आंतरिक है |उनकी रचनाएं दार्शनिक आयाम ग्रहण करती है परंतु निराला का संघर्ष दोहरा है,आंतरिक जगत में स्वयं के लिए तथा बाहरी जगत में जनसाधारण के लिए |

RRIJM 2015, All Rights Reserved

निराला जी की कुकुरमुत्ता रचना किसी वाद की सीमा में नहीं है अपितु मार्क्सवादी चेतना है यह कविता सर्वहारा की चेतना तथा पूंजीवाद के विरोध का विषय है, जो आधुनिक विषय और व्यंग्यपरक है:-

'अबे सुन ह वे गुलाब
खून चूसा खाद का अशिष्ट
डाल पर इतराता है कपलिस्ट| '

निराला जी ने वह तोड़ती पत्थर , भिक्षुक जैसी कविताएं भी लिखी| विधवा के माध्यम से उन्होंने संस्कार-शीलता को स्थापित किया| बेला और नए पत्ते में निराला जी की मुख्य दृष्टि उर्दू और फारसी के छन्दो को हिंदी में ढालने की रही|अर्चना और गीत-गूंज में गहरी आत्मानुभूति और व्यंग्योक्ति है|उनकी कविता में विषय की विविधता है| उन्होंने एक ओर छोटे-छोटे मुक्तक काव्य लिखे तो दूसरी और लंबी कथात्मक कविताएं,एक और छंद मुक्त रचनाएं लिखी तो दूसरी और मुक्त छंद| एक ओर समास- शैली का प्रयोग किया तो दूसरी और सपाट बयानी| उनकी रचनाओं में वीर -रस,प्रसाद-गुण,ओज -गुण ,तत्सम शब्दावली सरल, सुबोध लोक- भाषा, व्यवहारिक - भाषा एवं अलंकृत- भाषा इत्यादि का दुर्लभ प्रयोग है| इनके काव्य में भाव, भाषा और च छंद तीनों स्वच्छंद है|

निष्कर्ष:- निराला जी की प्रतिभा बहुमुखी थी| उनके काम में तीन युग सुरक्षित हैं:- छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता| निराला जी को इस कारण विविध काव्यांदोलन का जनक कहा जाता है| भावबोध एवं कला दोनों स्तरों पर निराला के काव्य में वैविध्यता मिलती है| पौरुष,अहं ,ओज और इत्यादि को मोती की तरह पिरोया है| निराला जी का व्यक्तित्व उनके अनुभव के धरातल पर निर्मित है- 'संघर्षों का साक्षात्कार' उनके काव्य जीवन का आधार स्तंभ है| मुक्त छंद के प्रणेता सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से वास्तविक में निराले है|

सार- ग्रंथ

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, अनामिका,राजकमल प्रकाशन, 2019
2. प्रोफेसर सूर्यप्रकाश दीक्षित, छायावाद सौ साल, वाणी प्रकाशन, 2019
3. संपादक ज्ञानेंद्र कुमार संतोष , छायावाद प्रसाद निराला महादेवी और पंथ पंत नामवर सिंह , राजकमल प्रकाशन ,2018
4. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, परिमल, राजकमल प्रकाशन, 2008
5. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना, राजकमल प्रकाशन, 2016
6. डॉ नगेंद्र व हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैंक, 2018
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, 2020
8. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी साहित्य का सरल इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वान,2020
9. डॉ. मोहन लाल रत्नाकर व डॉ वीरेंद्र कुमार अग्रवाल, हिंदी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास, राष्ट्रीय हिंदी साहित्य परिषद 2017
10. भाषा दर्शन, वर्मा पब्लिकेशन, पटना

RRIJM 2015, All Rights Reserved